दैनिक भास्कर
श्रीगंगानगर भास्कर 25-11-2024

बाल साहित्य सबसे कठिन है, इसके लिए लेखक को बच्चे के भाव समझने के लिए उसके स्तर तक जाना पड़ता है - वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राजेश

भास्कर संवाददाता | श्रीगंगानगर

हिंदी और राजस्थानी के वरिष्ठ साहित्यकार एवं राजभवन में अतिरिक्त निदेशक (पीआर) के पद पर कार्यरत डॉ. राजेश कुमार व्यास ने कहा है कि बाल साहित्य सबसे कठिन है। इसके लिए लेखक को बच्चे के भाव समझने के लिए उसके स्तर तक जाना पड़ता है। ये बात उन्होंने रविवार को नोजगे बॉयज हॉस्टल में साहित्य अकादेमी, नोजगे पब्लिक स्कूल एवं सृजन सेवा संस्थान की ओर से आयोजित एक दिवसीय परिसंवाद के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही।

उन्होंने कहा कि जितने भी महान साहित्यकार हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन में बाल साहित्य की रचना अवश्य की है। दरअसल बाल साहित्य रचकर ही आप अपनी क्षमता का सही आकलन कर सकते हैं। सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार प्रमोद कुमार चमोली ने कहा कि बाल साहित्यकार मन से लिखता है। वह बाल मन को समझता है। तभी उसी के अनुरूप लिख पाता है। इस सत्र का संचालन सुषमा गुप्ता ने किया। इससे पहले, सुबह उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने कहा किसी भी लेखक की परिपक्वता का अंदाजा इसी बात से लगाया जाता है कि उसने बाल साहित्य की रचना कितनी और किस स्तर की है।

अगर बच्चों में शब्द का संस्कार नहीं आया तो उसमें संवेदना कैसे उत्पन्न होगी- मधु आचार्य आशावादी : मुख्य

अतिथि मधु आचार्य आशावादी ने कहा कि अगर बच्चों में शब्द का संस्कार नहीं आया तो उसमें संवेदना कैसे उत्पन्न होगी।

उन्होंने कहा कि तकनीक ने बालसाहित्य में बहुत बदलाव किया है। विशिष्ट अतिथि नोजगे पब्लिक स्कूल के चेयरमैन डॉ. पीएस सूदन ने कहा कि हमारे समाज में बच्चों पर इतनी पाबंदियां लगा दी गई हैं कि वह हंसना भूल गया है।

कृष्णकुमार आशु ने कार्यक्रम की रूपरेखा बताई। पहले सत्र की अध्यक्षता सीएल सांखला ने की। इसमें डॉ. कीर्ति शर्मा व प्रहलाद सिंह झोरड़ा ने पत्र वाचन किया। संचालन डॉ. आशाराम भार्गव ने किया।